भाकृअनुप-भारतीय पशु चिकित्सा अनुसंधान संस्थान, क्षेत्रीय केन्द्र पालमपुर द्वारा दिनांक 14.09.2023 को हिन्दी दिवस आयोजित

भाकृअनुप-भारतीय पशु चिकित्सा अनुसंधान संस्थान, क्षेत्रीय केन्द्र पालमपुर में दिनांक 14.09.2023 को हर्षोउल्लास के साथ हिन्दी दिवस मनाया गया। सर्वप्रथम डा. गोरख मल, प्रमुख क्षेत्रीय केन्द्र ने सभी को हिन्दी दिवस की शुभकामनाएं देते हुए कहा कि हिंदी भारत में सबसे अधिक लोगों के द्वारा बोली और समझी जाने वाली भाषा है। समय के साथ इसकी लोकप्रियता बढ़ती जा रही है। 14 सितंबर, 1949 को संविधान सभा ने जनभाषा हिंदी को राजभाषा का दर्जा प्रदान किया। भारत दुनिया में सबसे ज्यादा विविध संस्कृतियों वाला देश है। धर्म, परंपराओं तथा भाषा में विविधता के बावजूद यहां के लोग एकता में विश्वास रखते हैं। विश्वभर में हिंदी भाषा तीसरी सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा है। हिंदी दिवस हमें यह याद दिलाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है कि हिंदी विश्व की सबसे पुरानी भाषाओं में से एक है और प्रत्येक भारतीय को अपनी मातृभाषा में बातचीत पर गर्व महसूस करना चाहिए। उन्होंने यह भी बताया कि संस्थान के कुछ वैज्ञानिक गर्व से अपना परिचय व शोध प्रस्तुतिकरण हिन्दी में देना पसंद कर रहें है।

हिंदी को संविधान में राजभाषा का दर्जा मिला हुआ है। भारतीय संविधान में इसे राष्ट्रभाषा तो नहीं पर राजभाषा के रूप में स्वीकार किया गया। इसके तहत शासकीय कामकाज के लिए आधिकारिक भाषा के रूप में हिंदी का प्रयोग किया जाना चाहिए। इसके अतिरिक्त उन्होंने बताया कि भाकृअनुप-भारतीय पशु चिकित्सा अनुसंधान संस्थान, क्षेत्रीय केन्द्र पालमपुर में धारा 3(3) के तहत अधिकारिक कार्य शत प्रतिशत हिन्दी में किये जाते हैं एवं सामान्य आदेश, अधिसूचनाएँ इत्यादि द्विभाषी जारी किये जाते हैं।

हिन्दी दिवस के उपलक्ष्य पर डा. गौरी जैरथ, वैज्ञानिक द्वारा स्वरचित कविता प्रस्तुत की व बताया कि विदेशों में जैसे जर्मनी व जापान अपनी भाषा को अधिक महत्त्व प्रदान करते है इसलिए वह इतने विकसित हैं। अतः हमें अपनी भाषा में बोलने, लिखने एवं पढ़ने में संकोच नहीं करना चाहिए। अनुसंधान संस्थान होने के कारण हमें अपने शोधों का प्रकाशन अधिकतर हिन्दी में करना चाहिए ताकि आम जनमानस तक इसे पहुँचाया जा सके।

श्री आर. रणजीत सिंह, तकनीकी अधिकारी द्वारा हिन्दी दिवस के उपलक्ष्य पर इसकी महत्ता के बारे में बताया एवं स्वरचित हिन्दी कविता ‘‘पेड़ कितने उपकारी’’ प्रस्तुत की। अंत में डा. बी. सिंह, प्रधान वैज्ञानिक एवं हिन्दी अधिकारी ने भी इस अवसर पर अपने विचार प्रस्तुत किए।